

233

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,  
JAMMU

No. १३३

Title राधिका विनोदः

Author रामचन्द्रः

Extent ४ पत्र Age सं. १७०६

Subject काव्य

का  
राधिका विनादः  
~~२३३~~

२३३



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

५ मालीनो १

रा. २

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ मालीनो वनमालीनो वलमाली ॥ मा  
लीनो वनमाली मालीनो वतुमाली ॥ १ ॥ विधुसुहृदिरहानल  
पीडिता विधुसुहृतरत्नानि लपीडिता ॥ विधुसुहृदनालि  
मपीडिता विधुसुहृत्सुगिरी किरकीडिता ॥ २ ॥ उदयते दय  
ते दयते शशी सखि करैरकं निमिराकरैः ॥ दिशमिमं रत्न  
मांचरमारमं कमलकोमल लोलललोचनं ॥ ३ ॥ कुमुदवं

राम

धुरवं धुरवं धुरः सतनुते तनुते तनुते तनुते ॥ हिमकरो हिमतां  
 हिमतां नतां किमनुमांसदृशं स दृशं विधोः ॥ ४ ॥ कमलिनी  
 मलिनामलिनालिना विचलता सुलता सुलता शुभा ॥ विधु  
 तभां विधुतां विधुभा नुमिर्य नयो रनयो नयसी नयोः ॥ ५ ॥ सरि  
 विभाति विभाति विभा विभा न सरसी सरसा सरसा रसे ॥ अवि  
 कुले विधुता विधुना धुता विजम कुमुखी विमुखी स्मिता ॥  
 ६ ॥ कुमुदिनी दयितो दयितो नितानि न करैरकरैर्दहति स्फु



रा. द.

८॥ यदगमेकपदे विपदे भवद्विकचपुष्करिणी हरिणी दशः  
७॥ विधुरिता धुरिता वनिता दह न विधुरयं जनि तो जानितो  
कभत ॥ इह तदक्षि गते क्षि गते क्षि नीर विमति विमति मि  
मिमीत्त सा ॥ ८॥ मत्नय पन्नग पन्नग मुंडनी कवलितो  
वलितो नुवना निलः ॥ अदय मग मदंग मदंग कंदहाति  
यद्गमयं भ्रमयन्मयं ॥ ९॥ नवनी नवनी नवनी नवनी नवनी  
नवनी नवनी पवनी मती ॥ अलिकुलालिकुलालिकुलाल

२

राम

४ शारद ३

कुलाप्रतिहिमामहिमामहिमाहिमा॥१०॥वकुलमाकुलमा  
त्निपरागतितन्मधुपरागपरागपरातिभिः॥विशदशा  
रदंशारदंशशकलककलंककल्लिंकितं॥११॥नवम  
शोकमशोकमशोकदेसुरमिश्रमितात्तिवर्तारतं॥  
सखिसमाश्रयमाश्रयमाश्रयः कमलिनीमलिनीप  
द्वागतः॥१२॥सखिहितासिमतासिमतात्यमांनवम  
शोकमशोकमशोकदां॥तदिहमामवमामवमाम

रा. २.

मां ब्रज हरिं नव नीर द नीर दं ॥ १३ ॥ इति सखी गदिता गदि  
तादिता नवनराय वराय वराय वा ॥ इति गिरं कलया कल  
या कलनापदु गिरा मृदुता मृदुता दुता ॥ १४ ॥ मल यज्ञं त  
वुते तमुते तनो सहचरी नालिनी नलिनी दलं ॥ सुनय  
नानलनदं नलनदं वसातदपि सीरति सीरति वंधुता  
॥ १५ ॥ समुदिते मुदिते मुदिते ह्यो हि मकरे मकरे न  
रके श्रुती ॥ पि करवे वरवे वरवे तिसा हरिणा लोचन



लींछनत्नांछना ॥१६॥ नसहतेसहतेसहतेसखीतववि  
 योगनियोगप्रयोगहृद॥सुखदितांतनुणीसरणिंमणिं  
 किरतुनामनवंनवनीविजं ॥१७॥ अथतयाकलनयाक  
 लनयाशुभांवनजदामजदामजदीप्तिमान् ॥हरिरगान्त  
 मगान्तमगाच्चसासुदमतीव्रमतीवदृशोऽस्थितं ॥१८॥  
 रामचन्द्रकविनाकविनादःपूज्योत्तमसुतेनसुते

रा. द.

माराविका हृदयशोकदमासी शक्ति का हृदयशोकद  
माराव ॥ १९ ॥ इति राविका विनोदख्यं काव्यं समाप्तं  
॥ सम्भार ॥ १७० ॥ आयात शुल्क निती आयात लेखि ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ शुभमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्री श्री श्री रामो जयति ॥ ॥ ॥ ॥

राम